14/12/2025

शब्दों का जादू: पिलियन से विडरशिंस तक की यात्रा

****एक पिलियन सवार की तिलस्मी डायरी****

वह सुबह ऐसी कोई ख़ास नहीं थी। धुंधलका अभी पूरी तरह कुरसी नहीं छोड़ पाया था, और सड़क पर सन्नाटा एक सूती चादर की तरह लिपटा हुआ था। मेरे दोस्त रवि का फोन आया, "चल, एक चक्कर लगा आते हैं। पिलियन सीट तेरे लिए ही रखी है।" 'पिलियन'... यह शब्द सुनते ही मन में एक अजीब सी मधुर गूंज उठी। बाइक की पीछे वाली सीट के लिए इस्तेमाल होने वाला यह अंग्रेजी शब्द, आज हिंदी के सफर में इतना घुल-मिल गया है कि इसकी विदेशी पहचान धुंधली पड़ गई है। हम 'रिअर सीट' नहीं कहते, 'पिलियन' ही कहते हैं। यही तो भाषा का चमत्कार है – वह शब्दों को सीमाओं से परे ले जाती है, उन्हें अपना लेती है, उन पर अपनी मोहर लगा देती है। पिलियन पर बैठे हुए, जब हवा चेहरे से टकराती है और दुनिया पीछे की ओर भागती दिखती है, तो लगता है मानो हम भाषा के उसी सफर पर हों, जहाँ शब्द सिर्फ अक्षर नहीं, अनुभव बन जाते हैं।

लेकिन क्या हर शब्द का सफर इतना शांत और सहज होता है? ज़रा 'टायरडेड' (Tirade) के बारे में सोचिए। यह फ्रेंच मूल का शब्द है, जो एक लंबे, क्रोधित और आलोचनात्मक भाषण के लिए प्रयोग होता है। कल्पना कीजिए, कोई नेता जनसभा में जोशीला भाषण दे रहा है, या कोई शिक्षक कक्षा में बच्चों को डाँट रहा है – वह एक 'टायरडेड' है। यह शब्द अपने साथ एक ऊर्जा, एक आवेग, एक तूफान लेकर आता है। यह 'पिलियन' के शांत, यात्रा-भरे स्वभाव के एकदम विपरीत है। भाषा के इस महासागर में कुछ शब्द नौका की तरह शांत यात्रा करते हैं, तो कुछ सुनामी की तरह उमड़ पड़ते हैं। 'टायरडेड' उन शब्दों में से है जो बोलने वाले के गुस्से और नाराज़गी को सीधे श्रोता के दिल-दिमाग पर छाप देता है। यह शब्द अपने आप में एक विस्फोट है।

और फिर कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो इस विस्फोट को हवा देने का काम करते हैं – झूठ। लेकिन झूठ भी कई प्रकार के होते हैं। छोटा-मोटा झूठ, बड़ा झूठ, राजनीतिक झूठ... और फिर एक 'टैराडिडल' (Taradiddle)। यह एक ऐसा मनगढ़ंत किस्सा या तुच्छ झूठ है, जो अक्सर डींग हाँकने या दिखावा करने के लिए बोला जाता है। जैसे कोई शख्स कहे, "मैंने तो हिमालय पर्वत अकेले ही तैर कर पार कर लिया था!" यह एक 'टैराडिडल' है। यह शब्द अपने आप में ही एक मस्ती लिए हुए है। इसका उच्चारण करो तो लगता है जैसे जीभ मुँह में लोलक झुला रही हो। 'टैर-अ-डि-डल'। यह झूठ गंभीर नहीं, मनोरंजक है। यह दुनिया को रंगीन बनाने के लिए गढ़ा गया एक बुलबुला है, जो एक पल में फूट भी सकता है। 'टायरडेड' अगर गुस्से की आग है, तो 'टैराडिडल' उस आग में रंग बिरंगे फुलझड़ियों जैसी चमक है, जो सच्चाई को थोड़े समय के लिए छिपा देती है।

****स्निकरस्नी: शब्दों की धार और इतिहास की चुभन****

अब एक ऐसे शब्द पर नज़र डालिए जो सुनने में तो एक बच्चे की कोई नन्ही सी उपनाम जैसा लगे, लेकिन इसकी धार बहुत तेज़ है – 'स्निकरस्नी' (Snickersnee)। यह शब्द आता है डच भाषा के 'steken of snijden' (चुभाना या काटना) से।

यह एक लंबे चाकू या छुरे के लिए इस्तेमाल होता था, खासकर झगड़े या लड़ाई में प्रयुक्त होने वाले हथियार के रूप में। सोचिए, यह शब्द कितना चित्रण करता है! इसके उच्चारण में ही एक खटखटाहट, एक खरोंचने की आवाज़ छुपी है – 'स्निक-अर-स्नी'। यह वह हथियार है जो 'टायरडेड' को हकीकत में बदल सकता है। जहाँ शब्द ('टायरडेड') काम नहीं करते, वहाँ 'स्निकरस्नी' काम आ जाता है। लेकिन क्या यह सिर्फ एक पुराना, अप्रचलित शब्द है? ज़रा गौर कीजिए। आज के डिजिटल युग में, हमारे शब्द ही नए 'स्निकरस्नी' बन गए हैं। सोशल मीडिया पर की गई एक कटु टिप्पणी, एक वायरल होता झूठ ('टैराडिडल'), एक नेता की भड़काऊ भाषा ('टायरडेड') – ये सब आज के युग के 'स्निकरस्नी' हैं, जो सिर्फ कागज या स्क्रीन पर नहीं, इंसान के दिल-दिमाग पर वार करते हैं। शब्दों की यह धार कभी कम नहीं हुई, सिर्फ उसका स्वरूप बदला है।

और जब ये 'शब्द-हथियार' चलने लगते हैं, तो अक्सर तर्क और विवेक का पहिया उल्टी दिशा में घूमने लगता है। यहाँ आता है एक और रोचक शब्द – 'विडरशिंस' (Widdershins)। इसका मतलब है घड़ी की सूई की विपरीत दिशा में, यानी बायें से दायें (जबकि सामान्य दिशा दायें से बायें है)। प्राचीन यूरोपीय परंपराओं में, इस दिशा में चलना अशुभ, जादू-टोने से जुड़ा या प्रकृति के प्राकृतिक क्रम के विरुद्ध माना जाता था। 'विडरशिंस' घूमना अव्यवस्था और अराजकता का प्रतीक था। आज के संदर्भ में देखें, तो जब सार्वजनिक बहसें, राजनीतिक विमर्श और सामाजिक संवाद 'विडरशिंस' यानी उल्टी दिशा में चलने लगते हैं, तो समाज में अराजकता फैल जाती है। सत्य असत्य में, तर्क अतर्क में, सम्मान अपमान में बदलने लगता है। यह वह स्थिति है जब 'टैराडिडल' (झूठ) सत्य पर हावी हो जाता है, 'टायरडेड' (आक्रमक भाषण) तर्क को दबा देता है, और 'स्निकरस्नी' (शब्द-हथियार) संवाद की जगह विध्वंस ले आता है।

****पिलियन पर बैठकर विडरशिंस की सैर: एक समकालीन विश्लेषण****

अब इन सभी शब्दों को एक साथ रखकर देखिए। ये कोई बेतरतीब शब्द नहीं हैं; ये मानवीय संवाद, संघर्ष और सभ्यता के विकास के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। मान लीजिए, एक राजनीतिक नेता एक जनरैली में खड़ा है। वह विपक्ष के खिलाफ एक जोशीला 'टायरडेड' (क्रोधित भाषण) दे रहा है। उसमें वह कई 'टैराडिडल' (मनगढ़ंत दावे) पिरोता चलता है। उसके ये शब्द, उसके समर्थकों के लिए एक 'स्निकरस्नी' (हथियार) बन जाते हैं, जिससे वे विरोधियों पर 'वर्चुअल वार' करते हैं। इस पूरे प्रवाह में, तथ्यों की खोज और शांतिपूर्ण संवाद का पहिया 'विडरशिंस' यानी उल्टी दिशा में घूमने लगता है। और इस पूरे नाटक का एक साधारण नागरिक, जो सिर्फ सच जानना चाहता है, मीडिया और सोशल नेटवर्क्स की 'पिलियन' (पीछे की सीट) पर बैठा एक मूक दर्शक बनकर रह जाता है, जिसे यह सब देखते-सुनते हुए बस यात्रा करनी है, नियंत्रण उसके हाथ में नहीं है।

लेकिन क्या यह नियति है? क्या हमें इस 'विडरशिंस' यात्रा को स्वीकार कर लेना चाहिए? निश्चित रूप से नहीं। भाषा हमें जहाँ ले जा सकती है, वहीं से वापस लाने की शक्ति भी रखती है। इन्हीं शब्दों के इर्द-गिर्द हम अपना प्रतिरोध भी तैयार कर सकते हैं। 'टायरडेड' का सामना हम तथ्यों के शांत प्रस्तुतीकरण से कर सकते हैं। 'टैराडिडल' को हम जिज्ञासा और तर्क की कसौटी पर कस कर बेपर्दा कर सकते हैं। 'स्निकरस्नी' बन चुके विषैले शब्दों का मुकाबला हम संवेदनशीलता और मानवता के शब्दों से कर सकते हैं। और सबसे बढ़कर, हमें उस 'विडरशिंस' चक्र को तोड़ना होगा, जो हमें अंधकार की ओर ले जा रहा है। हमें विवेक और सद्भावना के पहिए को सही दिशा में, यानी 'डेओसिल' (widdershins का विपरीत, सही दिशा में) घूमने के लिए प्रेरित करना होगा।

****निष्कर्ष: शब्द-सत्ता और हमारी जिम्मेदारी****

इन शब्दों – पिलियन, टायरडेड, टैराडिडल, स्निकरस्नी, विडरशिंस – की यह यात्रा हमें एक गहन सबक देती है। भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं है; यह सत्ता, संघर्ष, कल्पना और विश्वास का साधन है। एक 'पिलियन' सवार की तरह, हम अक्सर भाषा की सवारी करते हैं, बिना यह सोचे कि यह हमें कहाँ ले जा रही है। लेकिन जागरूक नागरिकों का कर्तव्य है कि वे भाषा के इस वाहन के 'स्टीयरिंग' पर भी नज़र रखें।

हमें यह पहचानना होगा कि कब एक तर्क 'टायरडेड' बन रहा है, कब एक साधारण बयान 'टैराडिडल' में बदल रहा है, कब एक टिप्पणी 'स्निकरस्नी' का रूप ले रही है, और कब हमारा पूरा सामाजिक ताना-बाना 'विडरशिंस' घूमने लगा है। सच्ची शक्ति उन शब्दों को बोलने में नहीं है जो तबाही लाते हैं, बल्कि उन शब्दों को चुनने में है जो जोड़ते हैं, स्पष्ट करते हैं और उन्नति की ओर ले जाते हैं।

अंततः, यह हम पर निर्भर करता है कि हम भाषा का उपयोग एक पिलियन की तरह करें, जो सिर्फ सवारी करता है, या एक सजग चालक की तरह, जो अपनी मंजिल और अपने रास्ते को जानता है। शब्दों का जादू हमेशा बना रहेगा, लेकिन इस जादू का उपयोग अंधकार फैलाने के लिए हो या प्रकाश जलाने के लिए, यह निर्णय हमारा है। आइए, हम ऐसे शब्द चुनें जो हमें 'विडरशिंस' के अँधेरे मोड़ से निकाल कर, ज्ञान और एकता के उज्ज्वल मार्ग पर ले चलें। क्योंकि, जैसा कि एक कहावत है – "शब्द ही ब्रह्म हैं।" और इस ब्रह्म का सदुपयोग ही हमारी सबसे बड़ी सामाजिक और मानवीय जिम्मेदारी है।

विपरीत दृष्टिकोण: क्या शब्द वास्तव में इतने शक्तिशाली हैं?

****शब्दों के जादू का भ्रम****

लेखक ने 'पिलियन', 'टायरडेड', 'टैराडिडल', 'स्निकरस्नी' और 'विडरशिंस' जैसे दिलचस्प शब्दों के माध्यम से भाषा की सत्ता और हमारी नैतिक जिम्मेदारी के एक आकर्षक चित्रण का निर्माण किया है। यह दृष्टिकोण निस्संदेह प्रशंसनीय और विचारोत्तेजक है। लेकिन क्या यह संपूर्ण सत्य है? क्या शब्द वास्तव में इतने सामर्थ्यवान हैं कि वे समाज की दिशा बदल सकें? एक विपरीत दृष्टिकोण से देखें, तो यह 'शब्द-केंद्रित' नज़रिया एक भ्रम, एक 'टैराडिडल' ही प्रतीत होता है, जो वास्तविकताओं से दूर एक आदर्शवादी दुनिया की रचना करता है।

लेखक का मानना है कि एक 'टायरडेड' (आक्रमक भाषण) का सामना तथ्यों से किया जा सकता है। किंतु वर्तमान युग का कटु सत्य यह है कि तथ्य अक्सर भावनाओं के सामने निस्सहाय साबित होते हैं। सोशल मीडिया के युग में, एक प्रभावशाली 'टायरडेड', चाहे वह कितना ही तथ्य-विरुद्ध क्यों न हो, अपनी भावनात्मक अपील के कारण लाखों बार साझा किया जाता है। उसके विरुद्ध प्रस्तुत शांत, तार्किक तथ्य एक 'पिलियन' सवार की तरह पीछे रह जाते हैं, जिसकी आवाज़ इंजन के शोर में दब जाती है। लोग सत्य नहीं, वह सुनते हैं जो उनके पूर्वाग्रहों की पुष्टि करता है या उनके अंदर के क्रोध को स्वर देता है। ऐसे में, क्या वाकई 'तथ्य' कोई प्रभावी हथियार हैं? या फिर यह एक बौद्धिकता का भरम है जो हम अपने आप को दिलासा देने के लिए पालते हैं?

****स्निकरस्नी: वास्तविक हथियार बनाम शब्द-हथियार****

लेखक ने 'स्निकरस्नी' (छुरा) की आधुनिक व्याख्या करते हुए इसे शब्दों का हथियार बताया है। यहाँ एक गंभीर प्रश्न उठता है: क्या एक ट्वीट या एक भाषण, एक वास्तविक छुरे के समान हो सकता है? निश्चित रूप से नहीं। एक विषैली टिप्पणी से मानसिक आघात लग सकता है, लेकिन एक वास्तविक 'स्निकरस्नी' शरीर को काट देता है, रक्त बहाता है, और जीवन ले सकता है। इन दोनों को समान तराजू पर तौलना, हिंसा की वास्तविक पीड़ा को हल्का करना है। गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, शारीरिक हिंसा – ये वास्तविक 'स्निकरस्नी' हैं जो लाखों लोगों का जीवन छलनी कर देते हैं। इनके सामने, शब्दों की 'काल्पनिक धार' कहाँ ठहर पाती है? एक भूखे व्यक्ति के लिए रोटी का टुकड़ा, एक बेसहारा के लिए छत, एक पीड़ित के लिए न्याय – ये वास्तविक समाधान हैं। शब्दों की लड़ाई तो अक्सर उन्हीं का विशेषाधिकार है जिनकी बुनियादी ज़रूरतें पहले ही पूरी हो चुकी हैं। यह विमर्श का 'लक्जरी आइटम' है।

****विडरशिंस: प्राकृतिक चक्र या मानवीय व्याख्या?****

'विडरशिंस' यानि उलटी दिशा में घूमने की अवधारणा को लेखक ने अराजकता और अव्यवस्था का प्रतीक बताया है। परंतु प्रकृति स्वयं कितनी बार 'विडरशिंस' चलती है? चक्रवातों में हवाएँ उलटी दिशा में घूमती हैं। कुछ पौधों की बढ़त उलटे दिशानियम का पालन करती है। क्या यह अराजकता है? नहीं, यह प्रकृति का एक अलग तरीका है, एक वैकल्पिक लय है।

इसी प्रकार, समाज में जो 'विडरशिंस' या उलट-फेर दिखाई देती है, वह अक्सर स्थापित व्यवस्था के प्रति एक प्रतिक्रिया होती है। जब एक पूरी पीढ़ी को लगता है कि व्यवस्था का पहिया उसके हित में नहीं घूम रहा, तो वह उसे 'विडरशिंस' घुमाने का प्रयास करती है। फ्रांसीसी क्रांति, भारत का स्वतंत्रता आंदोलन – ये सभी तत्कालीन स्थापित व्यवस्था के लिए 'विडरशिंस' घूमने जैसे ही थे। इन्हें केवल 'अराजकता' कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। कभी-कभी, सही दिशा में बढ़ने के लिए पहले उलटी दिशा में चलना पड़ता है, ताकि गति पैदा हो सके। शब्दों पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करके, हम इस ऐतिहासिक और सामाजिक गतिशीलता को नज़रअंदाज कर देते हैं।

****मूक बहुमत: पिलियन सवार या वास्तविक शक्ति?****

लेखक ने सामान्य नागरिक को 'पिलियन' (पिछली सीट) का मूक यात्री बताया है। यह दृष्टिकोण नागरिक को एक निष्क्रिय, शक्तिहीन इकाई मान लेता है। परंतु इतिहास गवाह है कि वास्तविक शक्ति उसी 'मूक बहुमत' के हाथों में रही है। वह भीड़ जो सड़कों पर उतरती है, वह मतदाता जो मतपेटी में वोट डालता है, वह उपभोक्ता जो एक उत्पाद खरीदने या बहिष्कार करने का निर्णय लेता है – यह 'पिलियन' सवार नहीं, वरन् वाहन का स्वामी है। यह सच है कि वह हर दिन सक्रिय नहीं रहता, लेकिन उसकी निष्क्रियता ही उसकी सहमति है, जो व्यवस्था को चलाती है। शब्दों के इस खेल में उलझकर हम अक्सर इस वास्तविक, मूक शक्ति को भूल जाते हैं। समाज में परिवर्तन शब्दों से नहीं, बल्कि उस सामूहिक निष्क्रियता के टूटने से आता है, जब 'पिलियन' सवार यह तय करता है कि अब उसे गाड़ी की बागडोर स्वयं संभालनी है।

****निष्कर्ष: शब्द नहीं, कर्म हैं निर्णायक****

निस्संदेह, शब्द महत्वपूर्ण हैं। वे विचारों के वाहक हैं। लेकिन उन्हें एक रहस्यमय, अतिशक्तिशाली घटक मान लेना एक भ्रम है। शब्दों की शक्ति उनके पीछे खड़ी वास्तविक ताकत – आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक – से आती है। एक गरीब का सच्चा 'टायरडेड' दबा दिया जाता है, जबकि एक ताकतवर का 'टैराडिडल' सत्य बन जाता है। अंततः, दुनिया शब्दों से नहीं, हितों, संसाधनों और कर्मों से चलती है। शब्द तो सिर्फ उस यथार्थ का प्रतिबिंब हैं, या कभी-कभार, उस पर पड़ने वाला पर्दा। इसलिए, शब्दों की शुद्धता पर अत्यधिक ध्यान देने के बजाय, हमें उन वास्तविक संरचनाओं पर ध्यान देना चाहिए जो इन शब्दों को शक्ति देती हैं या बेअसर कर देती हैं। वास्तविक परिवर्तन का रास्ता 'स्निकरस्नी' जैसे शब्दों की व्याख्या से नहीं, बल्कि उन वास्तविक 'स्निकरस्नी' (हथियारों) को निष्क्रिय करने से निकलेगा, जो गरीबी, असमानता और अन्याय के रूप में हमारे समाज के सीने पर छुरा घोंप रहे हैं। शब्द बदलने से कुछ नहीं बदलता, व्यवस्था बदलने से बदलता है।